मकानों के प्रकार व वितरण प्रतिरूप (कानपरु देहात जनपद उ0प्र0 का एक प्रतीक अध्ययन)

डॉ0 सर्वेश्वर नाथ सिंह (एसो0 प्रोफेसर भूगोल)
एम0 एल0 के0 पी0 जी0 कॉलेज बलरामपुर (उ0प्र0)

मानव के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन हेतु भूवैन्यासिक सगं ठन में वाछित परिवर्तन करना ही भूगोल का परम लक्ष्य है। यह भी उल्लेखनीय है कि किसी भी क्षेत्र का भूवैन्यासिक सगं ठन स्थायी नहीं अपितु सतत् परिवर्तनशील है एवं कैसे यह परिवर्तन वाछित रूप मे ं हो, भूगोलवेत्ता इसके लिए सदैव सचेष्ट रहे हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भूगोलवेत्ताओं के साथ–साथ नियोजक एवं नीति निधार्र क भी प्रयत्नशील रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र– अध्ययन क्षेत्र प्राचीन मानव अधिवास एवं सभ्यता सपं न्न उर्वर गंगा मैदान का एक लघुभाग है।अध्ययन क्षेत्र कानपरु देहात जनपद गंगा–यमनु ा के निम्न दोआब में 25° 26′ स`26°58′ उत्तरी अक्षांश तथा

79°31′ से 80° 34′ पवू र्ी देशान्तर के मध्य में 5.361 वर्ग किमी० पर विस्तृत है, जा` भूतपूर्व कानपरु जिल` का भाग है। सम्प्रति कानपरु देहात जनपद 6 तहसीलो ं (अकबरपुर, भागे नीपरु , बिल्हौर, डेरापुर, घाटमपरु व रसलू ाबाद) 17 विकास खण्डों (घाटमपरु , फ्तारा, भीतरगांव, अमरौधा, राजपरु , मलासा, अकबरपुर, मथै ाा, सरवन खेड़ा, डेरापुर, रसलू ाबाद, झीझक, सन्दलपुर, बिल्हौर, चौबपे र, ककवन, शिवराजपरु) में विभाजित है जिसके अन्तर्गत 1.624 ग्राम व 10 नगरीय क्षेत्र (घाटमपरु , परखु ाराया, बिल्हौर, अमरौधा, सिन्दरा, अकबरपुर, रूरा, शिवली, झीझक, शिवराजपरु) सम्मिलित हैं।

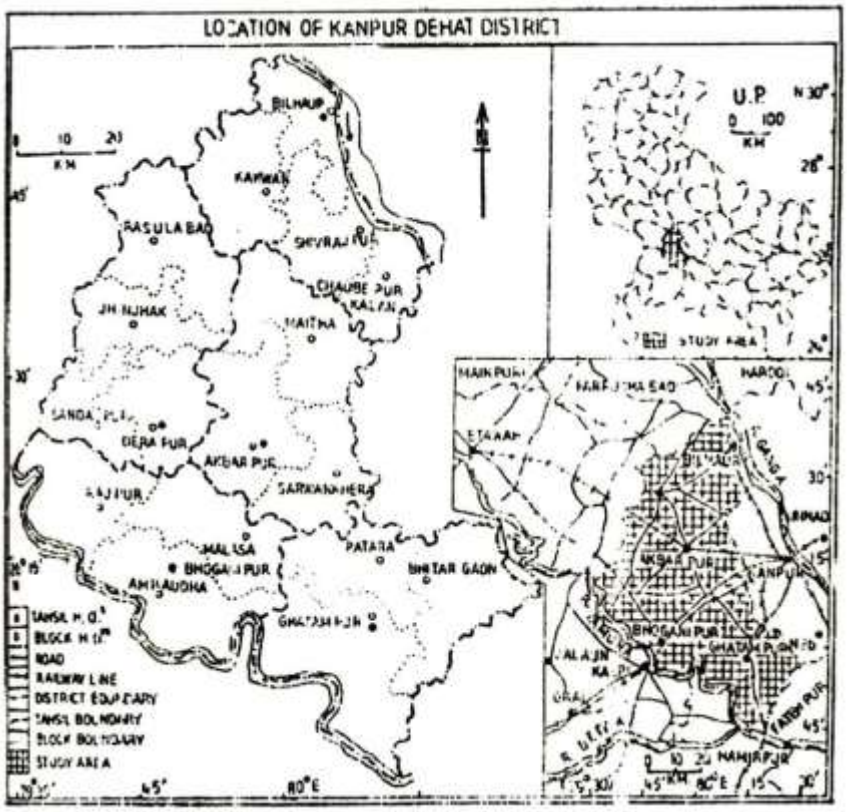

चित्र–1

मकान या गृह एक विशिष्ट रचना है जिस पर उपलब्ध निमार्ण ा सामग्री और उसके प्रति मानव की अनुक्रिया का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। गृह का` एक या एक स` अधिक गृहस्थों के आवास क्षेत्र के रूप में अभिकल्पित किया जाता है। भारतीय जनगणना विभाग ने झापे ड़ो ं का` पथृ ाक गृह के रूप में माना है, जबकि कुछ विद्वानों का मत है, कि मुख्य मकान के चतुर्दिक निर्मित विभिन्न झापे ड़ियो ं को एक ही मकान मानना चाहिए। मकान के प्रकारों का अध्ययन अधोलिखित आधारो ं पर किया जाता है–

(1) आमाप के आधार पर

(2) आकृति के आधार पर

(3) निमार्ण ा पदाथ ´ के आधार पर

(4) लाके परम्परा के आधार पर

(5) सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक गुणों के आधार पर। किन्तु क्षेत्र के मकानो ं के प्रकारों का अध्ययन करने के लिए (1) आमाप एवं निमार्ण ा पदार्थो के आधार का ही उपयागे किया गया है। आमाप के अनुसार मकानों के प्रकार–

सामाजिक, सास्ंकृतिक गुण आथिर्क दशाएं आदि ग्रामीण आवासां` के आमाप निर्धारण में महत्वपण्ू ा भूमिका अदा करते हैं। इन्हें 5 कोटियों में विभक्त किया जा सकता है– एक कमर` वाला, दा` कमर` वाला, तीन कमर` वाला, चार कमर ` वाला आरै पाचं कमर` वाला मकान।

शोधकता ´ ने क्षेत्र के 20 प्रतिशत उद्देश्यपण्ू ा यादृच्छिक–प्रतिचयन (रैंडम समै पलिगं) द्वारा मकानों के आमाप का विवरण प्रस्तुत किया हैं देखें सारणी सख्ं या–1.1 सारणी सख्ं या 1.1

कानपरु देहात जनपद में मकानों का आमाप (कमरों की संख्या पर आधारित)

(प्रतिशत में)

जदपद	एक कमरे का मकान	दो कमर` का मकान	चार कमर` का मकान	पांच या अधिक कमरे का मकान
कानपरु देहात	24.6	25.6	13.2	17.6

उपरोक्त तालिका सख्ं या 1.1 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिशत दो कमर` वाले मकानों का है। इसके बाद एक कमरे के मकान, फिर तीन कमरे का मकान, फिर पांच कमर` के मकान, आरै सबस` अन्त में चार कमर` के मकानो ं का क्रम आता हैं। निमार्ण ा सामग्री के अनुसार मकाना` ंके प्रकार– निमार्ण ा सामग्री के आधार पर मकानो ंके अभिनिधार्रण में दो मख्ु य तत्वों की प्रधानता रहती है– (1) निमार्ण ा सामग्री की उपलब्धता एवं उपयुक्तता आरै (2) निवासियों का सामाजिक सास्ंकृतिक आरै आर्थिक स्तर।

लेखक ने कानपरु देहात जनपद के मकानों को निर्माण सामग्री के अनुसार छः भागो ंमे ंविभाजित किया है, जैसा कि चित्र संख्या 1.2 में प्रदर्शित है–

(1) कच्ची दीवार एवं कच्चे सपाट छत

(2) कच्ची दीवार एवं खपरलै के छत

(3) सपाट, कच्ची छत एवं कच्ची दीवार युक्त मकान

(4) ईट से बने पक्के मकान

(5) कच्ची आरै पक्की दीवार तथा सपाट छत (6) कच्ची दीवार एवं छप्पर के छत

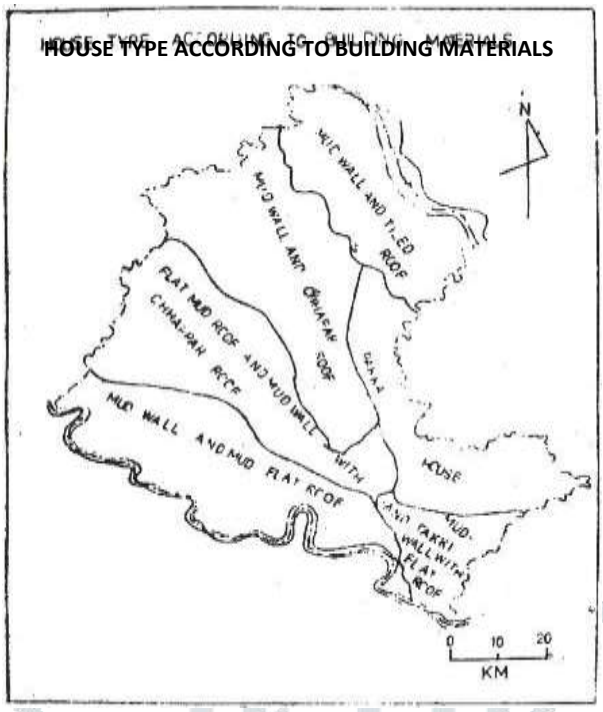

चित्र सखं या 1.2 सारणी सखं या 1.3

कानपरु देहात जनपद में निर्माण सामग्री के आधार पर मकानों का प्रतिशत विवरण (20 प्रतिशत यादृच्छिक प्रतिचयन के आधार पर)

क्षेत्र	घास–फूस	कच्ची दीवार बास	कच्ची ईंटें	पक्की ईंटें	अन्य	
नरकुल जनपद देहात	0.6	20.9	43.3	0.6	21.6	कानपरु

उपरोक्त तालिका सखं या 1.3 से स्पष्ट है कि क्षेत्र में सर्वाधिक मकान कच्ची ईटें वाले है। जबकि पक्की ईटों का प्रतिशत बहुत ही कम हैं। वस्तुतः ग्रामीण गृहो ं के अनगिनत स्वरूप केवल एक या दा ` कारकों का परिणाम नहीं है आरै न ही व ` एक मात्र प्राकृतिक अथवा सांस्कृतिक कारकों द्वारा निर्धारित है। उनके स्वरूप निधारित में स्वयं निवासियो ं के निर्णय स ` लके र उनकी परम्पराएं रीति–रिवाज, जाति व्यवस्था, धर्म, सस्ंकृति आरै सर्वापे रि कृ षकों का सामाजिक व परिवारिक सगं ठन, उनके किया कलापों के अनुरूप उनकी आवश्यकताए ं और उनकी आर्थिक स्थिति पर आधारित जीवन यापन आदि का मिला जुला विषम जाल, सम्मिलित है। यह भिन्न–भिन्न क्षेत्रो ं में विभिन्न अनुपातों स ` मिलकर बने "सटे ्स" द्वारा प्रभावित है। इसके अतिरिक्त गांवों के रूप परिवर्तन या विकास की गति यद्यपि नगरों की तुलना में धीमी है, फिर भी स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित है। सिंचाई की सुविधा, मशीनीकरण, अवस्थापनात्मक तत्वों का विकास, बदलते हुए जीवन मूल्य इत्यादि भी एसे ` कारक है। जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। विगत वर्षों में सरकार की आवास नीतियों का भी प्रभाव आवासां ` की गुणवन्ता पर पड़ा है। विशेषता इन्दिरा आवास याजे ना ग्रामीण स्वच्छता अभियान आदि याजे नाओं के चलता आवासां ` की सरं चना एवं गुणवत्ता परिवर्तन हुए हैं। सन्दभ–ं

1. स्टाने , के.एच. (1965) दी डेवलपमने ट ऑफ एक फाके स फार दी ज्याग्रफी ऑफ सेटिलमन्टे, एकाने ामिक ज्याग्रफी, वा. 41, पृ. 347।
2. सिंह, आर.एल. (1957), टिपिकल रूरल ड्वेलिंग्स इन दी अमलैन्ड ऑफ बनारस, इण्डिया, ने. ज्या. ज. इ., वा. III, पार्ट II, जून, पृ. 521।
3. जायसवाल, जे.एम. (1976) इक्जामिनिंग सेटिलमेन्ट्स इन स्टोनएज इण्डिया, पृ. 89–96 इन आरएल. सिंह एट आल (एडि.) ज्यागे ाफिक डाइमेन्सन्स ऑफ रूरल सेटिलमेन्ट्स, ने. ज्या. सो. ई., रिसर्च, पब्लि. सं. 16।
4. Bhawmik, K.L.;(ed.). "population Studies in Developing Nations" Society and Culture, 1978.
5. Aekerman, E.A.; "Geography and Demography in the study of Popu lation An Inventory and Appraisal, Edited by Philip M. Houser and other, Chicago University Press, Chicago, 1959.